International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 3 Mar. 2021, pp: 1376-1379 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

मुक्तिबोध की अनंत समकालीन कविता

डॉ. फिरोजा जफ़र अली, निर्मला परगनिहा

कल्याण सातकोत्तर महाविद्यालय ,भिलाई

Submitted: 30-03-2021 Revised: 06-04-2021 Accepted: 09-04-2021

सारांश - गजानन माधव मुक्तिबोध अपने समय और समाज के जागरुक एवं चिंतक रचनाकार हैं वह अपनी तन मन से काव्य सृजन के प्रति निरंतर बेचैनी दिखाते रहें और वही उनके साहित्य को हमेशा प्रभावित करती रही भारतीय समाज में मानव जन हमेशा से जाति, वर्ण और धर्म के नाम पर अधिकारों से वंचित और शोषण का शिकार होते रहे। मुक्तिबोध अपनी सामाजिक स्थिति से पूर्ण रूप से परिचित थे। तभी तो अपने रचनाओं में विचारों को कविता के माध्यम से वस्तु स्थिति से परिचित कराने का अथक प्रयास करते रहे। समकालीन कविता में वर्तमान दशा को प्रत्यक्ष दिखाने वालो में मुक्तिबोध का नाम अग्रणी हैं। उनकी कविता आज के संघर्ष, तनाव और यातना ग्रस्त जीवन को प्रत्यक्ष प्रतिबिंबित करती हैं। संघर्ष तनाव के यथार्थ स्वरूप को वे इतनी सहज और मर्मस्पर्शी भावों से अभिव्यक्त किए हैं जो चिरकालीन समय तक उचित और उक्त संगत रहेगी। स्पष्ट है कि मुक्तिबोध की समकालीन कविता सच्चे अर्थों में वर्तमान के साथ-साथ भविष्य का उचित आदर्शो से अभिप्रेरित करती रहेगी।

मुक्तिबोध प्रखर चिंतन एवं विचार धारा के कवि हैं मुक्तिबोध की समकालीन कविता को अंतर्विरोधो और अंतर्मन के द्वन्द्वो की कविता कहा जाता है। वे राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक आदिक्षत्रों में दष्टिगत विसंगतियों को हमेशा उद्घाटित करने का जोखिम भरा कदम उठाते रहे। मुक्तिबोध अपनी विद्रोहात्मक चिंतन को अपनी कविता में ओजस्वी वाणी से अभिव्यक्त किए हैं। उनकी कविताएं वर्तमान के लिए तो सार्थक है ही बल्कि भविष्य के लिए भी ऐसे उत्प्रेरक गंध के रूप में फैलने वाली है, जिसमें समस्याओं को परखने की ताकत होगी। मुक्तिबोध धर्म, राजनीति, जीवन मूल्य, नैतिक मानदंडों से संबंध निष्कर्ष देने में हमेशा ही साहस का प्रदर्शन किये है। उनकी कविताए अपनी सहजता से अभिव्यक्त करने वाली समकालीन कविताए होती है। मुक्तिबोध की कविताओं में उनके मन का गहरा असंतोष सहज ही झलकता है।

"अब अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाने ही होंगे,
तोड़ने ही होंगे मठ और गढ़ सब,
पहुंचना होगा दुर्गम पहाड़ों के उस पार।" ।

मुक्तिबोध की प्रारंभिक काव्य सृजन की शुरुआत छायावादी काल से ही हो चुकी थी, परंतु उनकी काव्य कृतियां किसी एक वाद के बंधनों में आबद्ध नहीं रह पाई। उनकी रचनाए किसी एक वाद व काल विशेष की न होकर अनेक वाद व काल को प्रभावित करती है। मुक्तिबोध का साहित्य विशिष्ट संदर्भों से उत्प्रेरित है । "मुक्तिबोध को किसी वाद की सीमा में आबद्ध करना उनकी व्यापक दृष्टि को सीमित करना होगा। हालांकि अधिकांश आलोचकों ने उन्हें 'मार्क्सवादी कवि' माना है इस तथ्य की पुष्टि व उनकी कुछ कविताओं से एवं उनकी गद्य कथनों से करते हैं। यह ध्यातव्य है की मुक्तिबोध सहज कवि होने के साथ जागरूक चिंतक और सर्जक कलाकार हैं उनकी चेतना के क्षणों को एक ही रूप में देखना एकांगी दृष्टिकोण के परिचायक हैं। वे हिंदी साहित्य के ऐसे कवि हैं जिनकी तुलना किसी कवि से नहीं की जा सकती ।"2

दरअसल मुक्तिबोध समकालीन कविता के अंतर्गत निम्न-मध्यम वर्गीय जीवन काल का उल्लेखित रचनाओं के काव्य धारा में प्रमुख स्थान है। जो अपने क्रांतिकारी विचार वाली कविताओं में परिवर्तन संघर्ष और निर्माण की दिशा में निरंतर बढ़ते रहें। यही उनकी दुरगामी मनोवैज्ञानिक सिद्धांत को दर्शाती हैं। मुक्तिबोध

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 3 Mar. 2021, pp: 1376-1379 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

ने आत्मसंघर्ष पर विचार कर उनमें मार्क्सवादी चिंतन को आलोचना की सीमाओं, अंतर्विरोधो तथा रूढ़ियों के विरुद्ध किए गए संघर्ष का प्रभावशाली चित्रण कर युग विशेष के लिए समसामयिक और प्रासंगिक बनाए हैं। जनता के शोषण, अभाव, दीनता की दशा से लड़ते हुए उसके लिए रौशनी भरा मार्ग दिखाना अपना कर्तव्य समझते हैं। कविता सृजन के दौरान मुक्तिबोध ऐसी बेचैनी, ऐसी जद्दोजहद से गुजर रहे होते थे, फिर भी हमेशा कविता को एक सामाजिक सांस्कृतिक कर्म के अनुरूप क्रियाशील रहते थे। अनुभूति पक्ष की सर्वोत्कृष्टता उनके काव्य-सृजन में झलकता है ,ऐसी गहन अनुभूति और विचारों में उद्दात्तता का संयोग समकालीन कृति निर्मित करते हैं। जो उनके संघर्षशील व्यक्तित्व से जुड़ कर प्रकाशमान हो जाते हैं।

" फिर वही यात्रा सुदूर की
फिर वही भटकती हुई खोज भरपूर
फिर वही आत्म चेतस अंतः संभावना
..- जाने किन खतरो में जूझे जिंदगी।" 3

मुक्तिबोध की चिर समकालीनता पूर्ण काव्य साहित्य जीवन के महत्वपूर्ण यथार्थ अनुभव को कथ्यात्मक रूप में व्यक्त करती हैं। उनकी कविताएं मानवीय संवेदना से इस तरह जुड़ी हुई है कि उनकी मर्मस्पर्शी भावुकता उनकी कविताओं में जगह-जगह दृष्टिगोचर होती हैं। मुक्तिबोध में अपने समकालीन कविता के माध्यम से अपने विचारों संवेगों , आवेगो और उत्तेजनाओं के साथ लगातार उनमे इन्द्र बनने की आकुलता के साथ निभाने की प्रतिभा सर्वत्र विद्यमान रही थी। उनके काव्य कला में नवीन जीवन जीने और कविता में यथार्थ की बोधगम्यता को अभिव्यक्त करने की कला विन्यास अद्दभुत क्षमता थी। उनकी काव्य कृति समकालीन बनाए रखने की प्रमुख विशेषताओं से परिपूर्ण है। उनकी कृतित्व, उनके काव्य वस्तु और कला पक्ष को नए शिल्प ढांचे में ढालने के साथ विषय को गति प्रदान करने वाली भी है। उनके प्रत्येक कविता में भाव एवं विषय की दृष्टि से स्वतंत्र चिंतन एवं समस्या का समाधान करने का पूर्ण प्रयास रहता है।

मुक्तिबोध के वैयक्तिक जीवन की समस्याएं कवि मन तक ही सीमित नहीं रही, वरन समाज के निम्न मध्यम वर्ग के मानव जीवन का वास्तविक प्रतिनिधित्व करने वाली कविता है। काव्य साहित्य में कवि जीवन और काव्य सृजन का परस्पर संबंध दिखाई देता है, कहीं प्रत्यक्ष रूप में तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप में अवश्य ही झलकती रहती हैं। मुक्तिबोध के जीवन में उनकी भावभूमि, दुख त्रासद, अवसाद, निराशा आदि के फल स्वरुप कविता में आक्रोशवृत्तियाँ फलतः प्रकट हो ही जाती हैं। वे अपनी पीड़ा और दुख को जीवन का सत्य बता कर काव्य सृजन करने में जरा भी संकोच नहीं करते थे। वे कविताओं के द्वारा असंतोष मन को व्यंग एवं प्रखर दृष्टि से व्यक्त करने में गौरव महसूस करते थे। आधुनिक समाज में संपूर्ण विश्व - उच्च वर्ग और सर्वहारा वर्ग के बीच संघर्ष से परिचालित हैं। कवि इन्हीं सर्वहारा वर्ग के संघर्ष को अभिव्यक्त कविताओं में अभागा कहकर व्यंजना के माध्यम से प्रकट करते हैं। मुक्तिबोध के कवि व्यक्तित्व एक आलोचक ,समीक्षक, विश्लेषक के दृष्टिकोण से तनाव, छटपटाहट, बिखराव एवं शक्ति संचयन की प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप में दिखाएं हैं। कवि के अंतर्मन में चल रहे संघर्षों व द्वन्द्वो को बाहर और भीतर के टकराव से विस्तार किए हैं। "अंधेरे में "यह कविता विचार प्रधान तो है ही साथ ही आत्मकथात्मक भाव भी है। यह कविता समकालीन अर्थवत्ता अपने गहरे मानवीय और सामाजिक द्वन्द्व वत्रासदी को इतने व्यापक स्तर पर व्यंजित करती हैं, इसलिए उनकी कविता में सशक्त और मार्मिक, तीखी और प्रत्यक्ष अनुभूति का अदभुत समावेश हैं। अपने समाज और व्यक्ति जीवन के गहरे अस्मिता की खोज भी हैं।

"अपने द्वंद को पहचानो उसे तीव्र करो और उससे जीवन स्थिति को बदल दो। बड़ी बात यह है कि, इस कार्य में तुम अकेले नहीं हो वस्तुतः यह आत्म संघर्ष ही मुक्तिबोध के लिए वह साधन है जिसके माध्यम से सामाजिक बदलाव लाया जा सकता है आत्म संघर्ष मुक्तिबोध के यहां व्यक्तिवांतर अर्थात व्यक्तित्व के सामाजिक विकास का भी माध्यम है। चंबल की घाटी में कविता में हवा टीले से कहती हैं कि जन संघर्षों में सक्रीय

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 3 Mar. 2021, pp: 1376-1379 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

होकर ही मध्यमवर्गीय व्यक्तिवाद से छुटकारा पाया जा सकता है और असली मुक्ति हासिल की जा सकती है यह असली मुक्ति ही अकेले की ना होकर सब की मुक्ति है, याद रखो कभी अकेले में मुक्ति नहीं मिलती यदि वह है तो सबके साथ है। "4 मुक्तिबोध की कविताओं में समकालीन युग तथा

राजनीतिक, सामाजिक और मानव के इतिहास का सजीव चित्रण है। मुक्तिबोध अपनी कविताओं में ऐसे बिंब, प्रतीक और रूपक के माध्यम से तत्कालीन समाज और व्यवस्था की भीतरी दुनिया की हलचलों को वर्तमान में प्रत्यक्ष प्रमाणित कर उजागर करते हैं। मुक्तिबोध की रचनात्मक जागरूकता अपनी पूरी बौद्धिकता और संवेदनात्मकता के साथ अनुभूति का एक अंग बनकर व्यक्त करते हैं। तभी तो उनको जीवन में सच्चाई का सामना करने में कई खतरे उठाने पड़े। "मुक्तिबोध की कविता का यथार्थ बहुत ही बदरंग मटमैला है हम यह कह सकते हैं कि वह कुछ नए ढंग का है। यहां अपना समय तो है ही कई जगह तो इतिहास का समय भी कौंधने लगता है और अतीत से वर्तमान तक यह यथार्थ एक लड़ी का रूप ले लेता है। पर उसे इतिहास समझना भूल ही कहीं जाएगी। वस्तुतः सच्चाई का पता लगाने के लिए कवि एक जिद और जुनून की तरह कहां-कहां नहीं जाता है और वह इस सच्चाई के हीरे को खोज लाता है, यह अवश्य है कि मुक्तिबोध की कविता का यथार्थ जीवन की जद्दोजहद के भीतर से पाया गया यथार्थ है। "5

मुक्तिबोध की कविता में समयानुरूप ऐसे संदर्भ को कविता के विषय में प्रवेश दिया है, जो आधुनिक समकालीन युग की काव्य सृजन की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है। साहित्यकार सही मायने में समाज में फैली कुरूतियों एवं विद्वूपतियो में संघर्ष करके व्याप्त बुराई को आईने की तरह दिखाती हैं। जिससे फैली असंतोष पर नए जीवन के रूप में उत्कर्ष और उत्थान की सफल सीढ़ियां बनी है। "कविता में संसार के लोगों की सामूहिकता का अनुभव रहता है और कविता पाठकों को अलग-अलग अभिव्यक्त होती है

दूसरो को होने वाली अभिव्यक्तिया छूट जाती है। प्रत्येक अपने लिए अपनी तरह से कविता को पाता है अपनी क्षमता की जरूरत की तरह कविता में एक समय तक उसकी अभिव्यक्ति वैसे ही बनी रहती है, अर्थ भी खत्म हो जाते हैं या बदल जाते हैं मुक्तिबोध जी की कविता में मनुष्यता का एक अमरत्व है और यह रहेगा और उनकी कविता भविष्य में समकालीन है।" 6 कवि काव्य सृष्टि करते समय व्यक्त मनोदशा को अपने भावों की कड़ी में पिरोता है। मुक्तिबोध की कविता ऐसे विचारों एवं भावों को पूर्ण प्रतिबद्ध कर समकालीनता प्रदर्शित कर वास्तव में सच्छे समकालीन काव्य की परंपरा का यथार्थ चित्रण के द्वारा स्वच्छंद भाव से निर्वहन करती है।

निष्कर्ष -

मुक्तिबोध के साहित्य सर्जना में वर्तमान परिवेश के संघर्षों का चित्रण है। वर्तमान समाज और भविष्य के समाज में भी मुक्तिबोध के समय के समाज की अपेक्षा अंतर और जटिल तो रहेगा ही परंतु सृजनात्मकता की पहल पूरी तरह समय की यथार्थता को आत्मसात कर लेता है। जन समाज में पीड़ित जीवन और आत्मसंघर्षों से जूझते मानव वर्ग की व्यथा को व्यक्त करते है जो कल भी भविष्य जीवन में पथ प्रशस्त करने में सफल होगी। मुक्तिबोध की रचना कर्म को समाज के समय सापेक्ष्य बन कर उचित आदर्शों के रूप में समग्र होकर सफल और प्रासंगिक बनी रहेगी। सामान्य जनजीवन के समस्याओं और जटिलताओं से जूझने वाली परिस्थितिगत कार्यों को सही अर्थों और संदर्भों से सरोकार करते हुए सच्चे अर्थो में मुक्तिबोध जन कवि बन कर सफल रहेंगे। जीवन के तत्कालीन परिस्थितयाँ उनकी समकालीन कविता से समय परिप्रेक्ष्य खरा उतर कर वैविद्यमान जीवन के प्रति आत्मचेतस , भाव बोध से संवेदनात्मक प्रतिक्रिया करने में अवश्य ही सफलता हासिल कर पाएगी। उसमें व्याप्त भाव दशा भविष्य के विचारधाराओं को मानवता के अनुकूल प्रदर्शित करेंगी। समकालीन कविता के विकास और प्रवृत्तियों से अपेक्षित गुण को चरितार्थ करने में मुक्तिबोध के अस्तित्वादी विचारधारा एवं चिंतन से उपजे ज्ञान काव्य साहित्य को समकालीन बनाने में सार्थक सिद्ध रहेंगी।

International Journal of Advances in Engineering and Management (IJAEM)
Volume 3, Issue 3 Mar. 2021, pp: 1376-1379 www.ijaem.net ISSN: 2395-5252

संदर्भित ग्रन्थ :

[1]. मुक्तिबोध गजानन माधव, चाँद का मुँह टेढ़ा, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन वाराणसी , प्रथम संस्करण 1964, पृ. सं. 261

[2]. राजपाल डॉ. हुकुमचंद, मुक्तिबोध की काव्य - चेतना और मूल्य - संकल्प, वाणी प्रकाशन, 21 - ए, दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1985, पृ. सं. 40

[3]. जैन नेमीचंद, मुक्तिबोध रचनावली-2 , राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली ,प्रथम संस्करण 1986 ,पृ. सं.257

[4]. जैन नेमीचंद सं., मुक्तिबोध रचनावली - 5 ,राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली ,संस्करण 2007 ,पृ. सं. 419

[5]. गोपाल कृष्णन वी. जी. सं., मुक्तिबोध विचार और विवेक वाणी प्रकाशन, 21 - ए , दरियागंज नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2019 , पृ. सं. 95

[6]. मिश्र राजेंद्र, छत्तीसगढ़ में मुक्तिबोध , राजकमल प्रकाशन 1- बी ,नेताजी सुभाष मार्ग दारीयगंज नई दिल्ली , प्रथम संस्करण 2014 पृ. सं. 25

International Journal of Advances in Engineering and Management
ISSN: 2395-5252

IJAEM

Volume: 03 Issue: 03 DOI: 10.35629/5252

www.ijaem.net
Email id: ijaem.paper@gmail.com